



SMT. DANDAMUDI SUMATHI RAMA MOHAN RAO

Smt. Dandamudi Sumathi Rama Mohan Rao is the lone A-Top grade mridangam artiste of AIR among women in India. She is the founder of an organization “Laya Vedika”, the object of which is conducting mridangam competitions to bring out the hidden talent of upcoming artistes and to tone up their skills. She played her role along with her husband Sri Dandamudi Rama Mohan Rao for the spread of “Pudukkottai Sampradaya” in India.

2. Born on 16th October, 1950, Smt. Sumathi belongs to a family of musicians. She was a student of Ghantasala Venkateswara Rao College of music and dance, Vijayawada, Andhra Pradesh. Subsequently she joined as lecturer in the said college and retired as principal of the college in 2008. She started giving concerts at a tender age of 10 under the guidance of her father and first guru Sri Nidumolu Raghavaiah. Later she learned intricate techniques in mridangam playing from Sri Dandamudi Rama Mohan Rao. She did diploma in mridanga vadya in Honours division. Later she married Sri Dandamudi Rama Mohan Rao and they became the only A-Top grade mridangam duo of India.

3. Smt. Sumathi was an accompanying artiste extending “sahakara” on mridangam to reputed artistes like M.S.Subbalakshmi, Chittoor Subramaniam Pillai, Voleti Venkateswarlu, Dr. M. Balamurali Krishna, Pt. Bhimsen Joshi, Kishori Amonkar, T.R.Subramaniam, M.Chandrasekaran, E.Sankara Sastri, Srirangam Gopalaratnam, Chitti Babu, N.Ramani, Mandolin U. Srinivas and many other instrumental musicians of India of international fame. She scaled new heights as a solo performer on mridangam with her laya vinyasam concerts.

4. Smt. Sumathi is recipient of numerous awards. To quote a few, she received “Best Mridangist” award twice from “Madras Music Academy” in 1974 & 1976; Palani Subramania Pillai memorial prize from Music Academy in 1985; “Best Mridangist” award from Indian Fine Arts Society, Chennai in 2005; “Best Citizens of India” award from International Publishing House, New Delhi in 2008; “Kendra Sangeet Natak Akademi” award from Hon'ble President of India in 2009; Guruvayur Dorai Trust award from Guruvayur Dorai Trust, Chennai in 2013; Ugadi puraskaram from the Government of Andhra Pradesh in 2015. She got titles like “Mridanga Siromani”, “Mridanga Laya Vidyasagara”, “Mridanga Maharani”, “Nada Bhageeratha”, “Laya Kala Nipuna”, “Sunada Sudhanidhi”, etc., from various cultural organizations across India. She is the first woman “Laya vinyasam Artiste” and lone woman mridangist to receive the “Kendra Sangeet Natak Akademi Award” in India in 2009.



श्रीमती दंडमूडि सुमति राममोहन राव

श्रीमती दंडमूडि सुमति राममोहन राव भारत में आकाशवाणी की अकेली ए—टॉप ग्रेड मृदंगम कलाकार हैं। वह एक संगठन “लय वेदिका” की संस्थापक हैं, जिसका उद्देश्य उदीयमान कलाकारों की छिपी हुई प्रतिभा को उभारने और उनके कौशल को निखारने के लिए मृदंगम प्रतियोगिताओं का आयोजन करना है। उन्होंने अपने पति श्री दंडमूडि राममोहन राव के साथ भारत में “पुदुकोट्टई सम्प्रदाय” के प्रसार के लिए अपनी भूमिका निभाई।

2. 16 अक्टूबर, 1950 को जन्मी श्रीमती सुमति संगीतकारों के परिवार से संबंध रखती हैं। वह आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा के घण्टासाला वेंकटेश्वर राव कॉलेज ऑफ़ म्यूजिक एंड डांस की छात्रा रही हैं। बाद में, वह उसी कॉलेज में व्याख्याता बनीं और 2008 में कॉलेज की प्राचार्या के रूप में सेवानिवृत्त हुईं। उन्होंने अपने पिता और प्रथम गुरु श्री निदुमोलू राघवय्या के सान्निध्य में 10 वर्ष की छोटी उम्र में ही संगीत कार्यक्रम देना शुरू कर दिया था। बाद में, उन्होंने श्री दंडमूडि राम मोहन राव से मृदंगम वादन की विद्या सीखी। उन्होंने ऑनर्स डिप्लोमा में मृदंग वाद्य में डिप्लोमा किया। उन्होंने श्री दंडमूडि राममोहन राव से विवाह किया और वे दोनों भारत की एकमात्र ए—टॉप ग्रेड मृदंगम जोड़ी बन गए।

3. श्रीमती सुमति एक सह कलाकार थीं, जो एम. एस. सुब्बलक्ष्मी, चित्तूर सुब्रमण्यम पिल्लै, वोलेटी वेंकटेश्वरलु, डॉ. एम. बालमुरली कृष्णा, पं. भीमसेन जोशी, किशोरी अमोनकर, टी.आर.सुब्रमण्यम, एम. चंद्रशेखरन, ई. शंकर शास्त्री, श्रीरंगम गोपालरत्नम, चिट्टी बाबू, एन. रमानी, मंडोलिन यू. श्रीनिवास जैसे प्रतिष्ठित कलाकारों और अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि वाले भारत के बहुत से अन्य वाद्य संगीतकारों को मृदंगम पर “सहकार” दे रही थीं। वह अपने लय विनयसम संगीत समारोहों में मृदंगम के एक एकल कलाकार के रूप में नए शिखर पर पहुंचीं।

4. श्रीमती सुमति कई पुरस्कार प्रदान किए गए हैं जिनमें 1974 और 1976 में “मद्रास संगीत अकादमी” से दो बार “सर्वश्रेष्ठ मृदंगवादक” पुरस्कार; 1985 में संगीत अकादमी से पलानी सुब्रमण्यम पिल्लै स्मृति पुरस्कार; 2005 में इंडियन फाइन आर्ट्स सोसायटी, चेन्नै से “सर्वश्रेष्ठ मृदंगवादक” पुरस्कार; 2008 में इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से “बेस्ट सिटीजंस ऑफ़ इंडिया” पुरस्कार; 2009 में भारत के माननीय राष्ट्रपति की ओर से “केंद्र संगीत नाटक अकादमी” पुरस्कार; 2013 में गुरुवायुर दोरई ट्रस्ट, चेन्नै से गुरुवायुर दोरई ट्रस्ट पुरस्कार; 2015 में आंध्र प्रदेश सरकार से उगाडी पुरस्कारम शामिल हैं। उन्हें भारत के विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों द्वारा “मृदंग शिरोमणि”, “मृदंग लय विद्यासागर”, “मृदंग महारानी”, “नाद भगीरथ”, “लय कला निपुण”, “सुनाद सुधानिधि” आदि जैसी उपाधियां प्रदान की गई हैं। वह 2009 में भारत में “केंद्र संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार” प्राप्त करने वाली पहली महिला “लय विनयसम कलाकार” और अकेली महिला मृदंगवादक हैं।